प्रकाशक :

कार्यवाह,
पुणे भारत गायन समाज
बाजीराव रोड, पुणे २.
फोन नं. ४४३९३७

सर्व हक्क प्रकाशकाच्या स्वाधीन

संपादक
श्री. कृ. वैद्य
प्राचार्य,
भास्कर संगीत विद्यालय, पुणे २.

किमत १० रुपये

मुद्रक
सौ. शैलजा गणेश बर्वे
वेदविद्या मुद्रणालय, ४१ बुधवार पेठ,
पुणे २.

किताबे मिलनेकी ठिकाने–

१. पूना भारत गायन समाज
बाजीराव रोड, पूना २.

२. एच. व्ही. मेहेंदळे अँड सन्स
अप्पा बळवंत चौक, पूना ३०.

प्रस्तावना

स्वर्गीय गुरु. संगीत कलानिधी मास्टर कृष्णरावजी लिखित भाग ३ रा (चतुर्थ वर्ष के लिये) हम प्रकाशित कर रहे है। इस किताबका दुसरा संस्करण करनेका अधिकार स्वर्गीय कृष्णरावजीके सुपुत्र श्री. राजाभाऊ फुलंब्रीकरजीने 'पु. भा. गा. समाज'को प्रदान किया है। इसी सौभाग्यसे 'समाजको' इस किताबका प्रकाशन करनेका मौका मिल रहा है।

सन १९६१ मे महाराष्ट्र राज्य सरकारने संस्थाके संगीत अभ्यास-क्रमको मान्यता दी है। यह अभ्यासक्रम स्वयं गु. कृष्णरावजीनेही बनाया है। इस अभ्यासक्रमके अनुसार किताबकी यह संस्करणकी रचनामे योग्य बदल किये गये है।

हर एक रागमे चिजोके साथ दिये हुवे आलाप और तानोमे जो कुछ बदल किये है, वे प्रत्यक्ष शिक्षण कार्यमे आनेवाले अनुभव सामने रखकर, किये गये है। यह बदल करनेका कार्य हमारे विनंतीसे 'भा. सं. विद्यालय'के प्राचार्य श्री. श्री. कृ. वैद्यजीने विचारपूर्वक उत्कृष्ट किया है और इस कार्यमे श्री. सुहास दातारकी हमे सहाय्यता मिली है।

श्री. राजाभाऊ फुलंब्रीकरने यह सुधारित आवृत्ती प्रकाशित करनेका अधिकार 'समाज' को दिया इसलिये 'समाज' उनका ऋणी है। संपादनका कार्य प्राचार्य श्री. वैद्य और सहाय्यक श्री. सुहास दातार तथा 'वेदविद्या मुद्रणालयके व्यवस्थापक सौ. बर्वे और उनके साथीदारोने यह किताबकी छपाई जलद और सुबक कर दी है। इसलिये हम सबको धन्यवाद देते है।

कार्यवाह
पुणे भारत गायन समाज
प्रकाशक

अनुक्रमणिका

सूचना : १) इस किताबमे केदार, शंकरा, पुरिया आदि रागोंके अस्ताई-अंतराके आलाप और छोटी बडी ताने दियें है। गुरूका मार्गदर्शन लेकर आलाप और तानें भिन्न भिन्न तालोमे स्वयं रचना करके राग विस्तार करना।

२) आलाप-तालोमे जहाँ स्वल्पविरामकी (,) निशानी है वहाँ थोडा रूकना ! आलापमे स्वरोंके आकार विशिष्ट लयमें नहीं है। वहाँ स्वरपर आघात करना नहि।

३) तालके ठेके स्वयं बजानेका प्रयत्न आवश्यक है।

स्वरों के सांकेतिक चिन्ह

१ मंद्र सप्तक की निशानी – (–) जैसे नी ध प

२ मध्य सप्तक की निशानी नही. जैसे ग म प

३ तार सप्तक की निशानी – (।) जैसे सां रें गं

४ कोमल स्वर की निशानी (ˎ) जैसे रे॒ ग॒ म॒

५ तीव्र स्वर की निशानी नही. जैसे रे ग म

ताल के चिन्ह

६ सम पहचानने की निशानी – (+)

७ काल पहचानने की निशानी – (०)

८ साधारण ताली की निशानी – (१, २, ३, ४)

९ एससे अधिक मात्रा स्वर लम्बाना हो तो उसकी निशानी (ऽ) जैसे म ऽ, प ऽ ऽ ऽ

१० एक मात्रामे दो अथवा अधिक स्वर आ जाय तो उसकी निशानी (‿) जैसे गम गमप

सूचना– जहाँ बिलंपद तथा तान के उठाव प्रारंभसे हो वहाँ उसके पहले बीजकी पंक्ति लिखी है और जहाँ वह नही लिखी वहाँ वह पंक्ति गायी जाय।

तबलेके ठेके और उसके चिन्ह

ताल—त्रिताल, मात्रा १६

धा धीं धीं धा । धा धीं धीं धा । धा तीं तीं ता । ता धीं धीं धा
+ २ ० ३

ताल—एकताल, मात्रा १२

धीं धीं । धागें तिरकिड । तू ना । क त्ता । धागे तिरकिड । धी ना
+ ० २ ० ३ ४

ताल—चौताल, मात्रा १२

धा धा । धी ता । किर धा । धी ता । किट तक । गदि गन
+ ० २ ० ३ ४

ताल—अध्धा, मात्रा १६

धा धी ऽत धा । धा धी ऽत धा । धा ती ऽत ता । ता धी ऽत धा
+ २ ० ३

ताल—दीपचंदी, मात्रा १४

धा धी ऽ । धा धा ती ऽ । ता ती ऽ । धा धा धी ऽ
+ २ ० ३

ताल—तेवरा, मात्रा ७

धा धीं ता तिट कत गदि गन
+ २ ३

राग—केदार

यह रागका गानस्वरूप वक्र है इसलिये रागप्रवृत्ती चंचल है। अवरोहमे म् रे सा स्वर लेते समय म् सारे सा ऐसी स्वरसंगत लेतेही कामोद, दुर्गा, सारंग रागसे यह राग अलग दिखता है। तीव्र मध्यम आरोहमे म प ध सां म प, मपधप म् ऐसा लिया जाता है। गंधार आरोहमे स्पष्ट रूपसे नही लेना, कोमल म् से पंचमपर जाते समय गंधार को स्पर्श करके लिया जाता है। उदा. सा म् ऽ प वैसेही पंचम से धैवत जाते समय तीव्र मध्यमको स्पर्श होता है। उदा. पऽ मधऽ प. तीव्र निषाद स्पष्ट लेनेकीभी प्रथा है। आलाप करते समय प म् रे सा यह स्वरसमूह मींडयुक्त लिया जाता है। राग समय रातका प्रथम प्रहर है। भक्तिरस प्रधान यह राग है।

आरोह—सा रे सा म्ऽ मऽ प ध प सां। सा म् प ध नी सां	जाती—ओडव संपूर्ण
अवरोह— सां नी ध प म प ध प म्ऽ सारे ऽ सा	वादी—मध्यम
मुख्य अंग— सा सा म् म् प प ध प म् ऽऽ सारे ऽ सा	संवादी—षड्ज

अस्ताईके आलाप

यह रागमे मध्य सप्तकमे षड्ज के आलाप करते समय मंद्रसप्तकमे पंचमस्वरतक कामोद, छायानट, गौडसारंग रागोंके आलाप सही दिखते है। इसलिये यह रागके मंद्र सप्तकके कुछ आलाप यहाँ दिये है।

१) साऽऽऽ, रेऽसाऽ, सारेनीसाऽ नीधऽ पऽऽ, पऽ, पधपप साऽ, रेरेसानीसाऽ, नीधऽ पऽ, पधमप साऽऽ.

२) सा रेऽऽ साऽ, सारेसासा रेऽ सा, रेरेसानीसाऽ नीधऽ पऽ, मपधमप साऽ, नीसारेनीसा रेऽ साऽ

३) साऽरेऽ सा, मऽऽ, मऽऽ रें सा, सारेनीसा नीधऽ पऽ, मऽ, मऽरेऽ साऽ सारे सामऽ, रे सा ध पऽ, पसा रे सामऽ, मऽ सारेऽ सा.

४) सारेसासा मऽ, ममरेसाऽ, सासाधपऽ, पधपप साऽ, सारेसासा मऽ, मपधनीसाऽ, सानीरेंसा मऽ, मपधमप, नीसारेनीसा मऽ, गपऽ, म रे सा

५) सा मऽ गपऽऽ, पऽऽ मऽ मऽ गपऽ, पऽ सा सारे सा, सा मऽ गपऽ, पऽमपऽमऽ, प म, रे सा.

६) सासामगपऽ, पपमरेसा, रेसासाधपऽ, पपसानीरेसामगपऽ, सारेसासामऽ, सारेसासापऽ, मगपप सानीरेसा, पधंपपसा, सारेसासामऽ; मपमगपऽ, प मधऽ पऽ मऽ, सारेंऽ सा.

७) सा मऽ, गपऽ, म धऽ पऽ, मपधप मऽ, मग पम ध प, पधपप मऽ, सारेसासा पधपप धपमऽ, धपमऽ, धपमऽ, मपपध धनिऽ ध प मपधप मऽ, म प सां.

अंतरेके आलाप

१) सांऽऽ, सांऽध पऽ, धप मऽ मप सांऽ, सांऽ, साऽ, सामऽ, गपऽ, मधऽ, पसांऽ.

२) पधपप सांऽऽ, सांऽ धप मऽ, म मप, प पधऽ, प पसांऽ, सांसांधपमऽ, पपमरेसाऽ, सारेनीसा मऽ, मपमगपऽ, पधमप सांऽ, पपसांनी रें सांऽ.

३) प सांऽ नी रेंऽऽ सांऽ, सां सांरेंऽ सांऽ, रेंऽ सांनीधप मधपमऽ, नीसारेनीसा मपधमग, नीसांरेंनीसां मं सांरेंऽ सांऽ.

४) सांरेंसांसां मंऽऽ, मंऽ, मंमंरेंसां, सांसांधप, धधपमऽ, मग पम धप सांनी रेंसां मंऽ, मं रें सां ध प मऽ, म मप, प पसां, सां सांमंऽ रें सांऽ.

अस्ताईकी तानें

मम पप मम रेसा, पप धप मम रेसा, मप धप मम रेसा, धध पप मम रेसा, सांसां धप मम रेसा, रेंसां धप मम रेसा.

सासा मम पप मग मम रेसा, धध पप मम पप मम रेसा, मम पप सांसां धप मम रेसा, सांरें सांसां धप मप मम रेसा.

मम रेसा धध पप सांसां धप मम रेसा, पप सांसां रेंरें सांसां धप मप मम रेसा, मग पम धप सांनी रेंसां धप मम रेसा, पप सांनी रेंसां धप मप धप मम रेसा.

(मम) पप मम रेसा, (पप) धध पप मम, (सांसां) रेंरें सांसां धप, सांसां रेंरें, पप सांसां, पम धध, मम पप, सासा रेसा.

सानी रे॰ पम धप सांनी रेंसां मंमं रेंसां धप मम रेसा.

सासारेसारेसासा, पपधपधमप, सांसांरेंसांरेंसांसां, मंमंमंमंरेंसां, धधधधपप, पपपपमम, ममममरेसा.

सारेसासा, पधपप, सांरेंसांसां, मंमं रेंसां, सांसां रेंरें, पप सांसां, पप धध, मम पप, मम रेसा.

पप सानी रेरे सासा, सासा मग पम धप, पप सांनी रेंरें सांसां, सांमंमं सांरेंरें पसांसां पधध मपप सामम सारेरे सासा.

अंतरेकी ताने

मप धप मप सां, पप सांनी रें सां, मृग पम धप सां, रेंसां धप मप सां
पध मप सांनी रेंसां, सांसां मृ रेंसां सां.

सासा मृग पम धप सांनी रेंसां, मृम् रेसा धध पप रेंरें सांसा, पप धध प
सांनी रेंरें सांसां, सांसां मृम् रेंसां धप मप सां.

सांसां धप मृम् रेसा मृग पम धप सां, सांसां रेंरें सांसां धप मप धप म
सां, मृ रेसा ध पप रें सांसां मृ रेंसां.

(सा) मृ प मृम् रेसा (मृ) प ध पप मृम् (प) सां रें सांसां धप सां
रेंसां सां रें सांध प सां धप म ध पम् मृ प मृरे सा मृ रेसा.

मृप पम् पप मृम् रेसा, पध धप धध पप मृम्, पसां सांप सांसां धप मप
सांरें रेंसां रेंरें सांध पध सांसां धध पप धध पप मृम् पप मृम् रेसा.

राग–केदार ताल–एकताल (विलंबित लय)

सीखे हो छलबल नट नागर । एहो नट नागर ॥ धृ ॥
मुरली अधरधर अदक बिराजत । मोर मुकुट बुध सागर ॥ १ ॥

अस्ताई

ना
सीऽ खे
मृऽ प

धिं	धिं	धागे	तिरकिड	तू	ना
+		०		२	
हो	ऽ	छऽ लऽ	बऽ ऽऽ	लऽ नट	नाऽ गर
ध	प	पध मप	मृऽ ऽग	पऽ धप	मृऽ रेसा

क	त्ता	धागे	किरकिड	धीं	ना
०		३		४	
एऽ ऽहो	नऽ टऽ	नाऽ ऽऽ	ऽऽ गऽ	रऽऽऽ ऽ	
सारे साम्	मृग पऽ	मप पध	धनि् धप	पधपप म्	

अंतरा

धी	ना
४	
मुर लीऽ	अध ऽ
पप सांऽ	सांसां सां

धिं	धिं	धागे	तिरकिड	तू	ना
+		०		२	
धऽ रऽ	अऽ दऽ	कऽ बीऽ	राऽ जऽ त	मोऽ रऽ	मुकु ऽ
रेंऽ सांऽ	सांऽ धऽ	सांऽ रेंऽ	सांऽ धपम्	मृग पऽ	पध ऽ

क	ता	धागे	तिरकिड	धीं	ना
०		३		४	
बुध ऽऽ	साऽऽऽ	ऽ ऽ	ग ऽ	रऽऽऽ ऽ	
पसां सांरें	सांरेंसांसां	ध नि्	ध प	पधपप म्	

राग-केदार ताल—एकताल (द्रुतलय)

चतुर सुगर बैया पकरत । हो बलमा वेतो नवेलि नार कहाँ जाने हित की सार गोयार ॥ धृ ॥ महा जान अत प्रवीन सब बिध जानत हो बलमा । वेतो अपने घरकी लाड लडोनी लाड लिको लीजो मनाय । कर प्यारे सरस गरबा लगाये ॥ १ ॥

अस्ताई

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	त्ता	धागे	त्रक	धीं	ना
+		०		२		०		३		४	
च	तु	र	सु	ग	र	बैऽ	ऽऽ	या	ऽ	प	क
सा	सा	सा	प	प	प	मप	धप	म्	ऽ	रे	सा
र	ऽ	त	ऽ	हो	ऽ	ब	ल	मा	ऽ	वे	तो
रे	ऽ	सा	ऽ	प	ऽ	ध	प	म्	ऽ	प	प
न	वे	लि	ना	ऽ	र	क	हा	ऽ	जाऽ	ऽ	ने
ध	नि्	ध	प	ऽ	प	ग	ग	ऽ	गम्	ध	प
हि	त	कि	सा	ऽ	र	गोऽ	ऽऽ	ऽ	या	ऽ	र
ग	म्	रे	सा	ऽ	सा	मप	धप	ऽ	म्	ऽ	म्

अंतरा

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	त्ता	धागे	त्रक	धी	ना
+		०		२		०		३		४	
च	तु	र	सु	ग	र	म	हा	ऽ	जा	ऽ	न
						प	प	ऽ	सां	ऽ	सां
अ	त	प्र	वी	ऽ	न	स	ब	बि	ध	जा	ऽ
सां	सां	रें	सां	ऽ	सां	ध	नी	सां	रें	सां	ऽ
न	त	हो	ऽ	ब	ल	मा	ऽ	वे	तो	अ	प
ध	प	म्.	ऽ	म्	ग	प	ऽ	प	प	ध	नि्
ने	घ	र	की	ला	ड	लऽ	डो	ऽ	नी	ला	ड
ध	प	प	प	प	प	धप	म्	ऽ	म्	म्	ग
ली	को	लि	जो	म	ना	ऽ	य	क	र	प्याऽ	ऽ
ध	प	म्	म्	रे	सा	ऽ	सा	प	प	धनी	ऽ
रे	स	र	स	ग	र	बा	ऽ	लऽ	गा	ऽ	ये
नी	रें	सां	नी	ध	प	प	ऽ	धप	म्	ऽ	म्

धृपद, राग—केदार ताल—चौताल (मध्यलय)

सरस सीस मुगुट मोर पौछन को राजत कुंडल । ललत कुटील आलख भाल बिसाल तिलक । मृग मदको नीके झलके ॥ धृ० ॥ भोये धनुख नैन कमल नास कीर अधर बिंब । दसन कुंद केंबु । कौंठता मधमणी कौस्तुभ । छबी छाये रही ॥ १ ॥

धा	धा	धीं	ता	किट	धा	धीं	ता	किट	कत	गदि	गन
+		०		२		०		३		४	
						स	र	स	सी	ऽ	स
						सा	सा	सा	म्	ऽ	म्
मु	गु	ट	मो	ऽ	र	पौं	ऽ	छ	न	को	ऽ
म्	म्	ग	प	ऽ	प	प	ऽ	प	प	ध	नि्
रा	ऽ	ऽ	ज	त	ऽ	कुं	ऽ	ड	ल	ल	ल
ध	ऽ	प	प	प	ऽ	प	ऽ	म्	म्	म्	म्
त	कु	टि	ल	अ	ल	ख	भा	ऽ	ल	बि	सा
म्	प	प	प	ध	प	म्	म्	ऽ	म्	म्	म्
ऽ	ल	ति	ल	क	मृ	ग	म	द	को	ऽ	ऽ
ऽ	म्	म्	म्	म्	म्	ग	प	प	प	ऽ	ऽ
नी	ऽ	के	श	ल	के	स	र	स	सी	ऽ	स
म्	ऽ	रे	सा	सा	सा	सा	सा	सा	म्	ऽ	म्

अंतरा

धा	धा	धीं	ता	किट	धा	धीं	ता	किट	कत	गद	गन
+		०		२		०		३		४	
मो	ऽ	थे	ऽ	ध	नु	ख	नै	न	क	म	ल
म्	ऽ	प	ऽ	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां
ना	ऽ	स	की	ऽ	र	श	ध	र	बी	ऽ	ब
सां	ऽ	रें	सां	ऽ	नी	ध	ध	प	प	म्	म
द	स	न	कुं	ऽ	द	कैं	ऽ	बु	कौं	ऽ	ठ
म्	म्	म्	प	ऽ	प	ध	नी	रें	सां	नी	ध
ता	ऽ	म	ध	मऽ	णी	कौं	ऽ	स्तु	भ	छ	बीऽऽ
प	ऽ	प	प	धप	म्	म्	ऽ	प	प	सां	धपप

ऽ ये र ही ऽ स र स सी ऽ स

ऽ म् रे सा ऽ सा सा सा म् ऽ म्

राग–केदार तराना, त्रिताल (जलदलय)

नादिर दिर दानि तदानि तों तों तों तन नननन देरेना दीं तदी तान्न
रे तदारे तन देरे तद्रे दानि ॥ धृ० ॥ यललमु यलली यला यलाले
ं तन नननन तदारे तद्रे दानि ॥ १ ॥

ता	तीं	तीं	ता	ता	धीं	धीं	धा	धा	धीं	धीं	धा	धा	धीं	धीं	धा
				३				+						२	
	दिर	दिर	दा	नि	त	दा	नि	तों	ऽ	तों	ऽ	तों	ऽ	त	न
	म्	म्	म्	म्	प	म	प	सां	ऽ	प	ऽ	प	ऽ	म्	म्
	न	न	न	दे	रे	ना	दे	रे	ना	दीं	ऽ	त	दीं	ऽ	ता
	ध	म्	प	म्	म्	रे	सा	सा	रे	सा	ऽ	प	ध	ऽ	प
	न्न	दे	रे	त	दा	ऽ	रे	त	न	दे	रे	त	द्रे	दा	नि
	ध	म्	प	सां	ध	ऽ	रें	सां	सां	ध	प	म्	म्	रे	सा

ता	तीं	तीं	ता	ता	धीं	धीं	धा	धा	धीं	धीं	धा	धा	धीं	धीं	धा
				३				+						२	
	ल	ल	मु	य	ल	ली	ऽ	य	ला	ऽ	य	ला	ले	दीं	ऽ
	प	म्	म्	प	प	सां	ऽ	रें	सां	ऽ	म्	म्	प	सां	ध
	त	न	न	न	न	न	ऽ	त	दा	ऽ	रे	त	द्रे	दा	नि
	रें	रें	सां	सां	ध	प	ऽ	म्	म्	ऽ	प	म्	म्	रे	सा

राग-हमीर

यह राग मंद्र सप्तकमे केदार, कामोद, छायानट, गौड सारंग
रागोंसे अलग दिखानेके लिये मंद्र सप्तकके गंधार तक विस्तार क
आवश्यक है। इस समय तीव्र नीषाद अलग रखना चाहिये। धैवतपर न
करके नीषाद लगाना चाहिये। ध म प यह स्वर संगती रखनेसे
सप्तकके गंधार तक नही जाना पडेगा। प ध नी सा यह स्वर संगती दि
समय बिलावल राग अलग दिखाने के लिये धैवतपर न्यांस करना चाहि
धैवत के बाद नी सा यह स्वर लिये जाते है। यह राग चंचल प्रकृती का
रातके दुसरे प्रहर में यह राग गाया जाता है। इसका गंभीर रस है।
रागके आरोहमें सा ग म ऐसीही स्वरसंगती लेते है। सा रे ग म यह
संगती लेते समय सा रे ग ग म ऐसी संगती लेना नहीं।

आरोह—सा रे सा ग म ध नी सां	जाती—वक्र संपू
अवरोह—सां नी ध प म प ग म् रे सा	वादी—धैवत
मुख्य अंग— सा ग म् ध ऽ ध प म प ग म् रे ग म् ध प ग म् रे सा	संवादी—गंधार

विस्तार

साऽऽऽ, ध म पऽ, नीऽसाऽ, सा रे साऽ, सा ग म् रे सा ध म प
धऽ नी साऽ.
साऽ ग म् प ग म् रे सा ध म पऽ, धऽ नीऽ सा.
सा ग म् प ग म् धऽ म पऽ, ग गम् धऽ म पऽ, ग म् रे साऽ, सा ग म
म प ग म रेऽ, ग म ध म प ग म् रे साऽ, सा रे ग म् प ग म् धऽ म प
ग म् ध ध नी नीऽ धमऽप, ग गम् ध नी सां नी ध म पऽ, ग म् ध नी
नी ध म पऽ, ग म् रे, ग म् ध म प ग म् रे सा.

अंतरेका विस्तार करते समय मध्यसप्तकमे जैसे आलाप तार सप्तकमे चाहिये। क्योंकि भिन्न स्वर रचना करना मुष्किल है।

ताना

गम् धप मप गम् रेसा, सारे गम् धनी सांनी धप मप गम् रेसा, धनी
सांनी धप मप गम् रेग मध मप गम् रेसा, सारे गम धनी सांरें गंमं रेंसां
रेंसां नीसां धनी सांरें सांनी धप मप गम् गम् रेग रेग मध मप गम् रेसा,
मप गम् रेसा, नीसां धनी पध मप, गंमं सांरें नीसां धनी पध मप गम्
नीसां धनी पध मप, गंमं सांरे नीसां धनी पध मप गम् रेसा, सासा
मप गम् धऽ, गम् गम् सारे सारे गम् धऽ, नीनी धप मप धध मप गम्
मधऽ, सारे सारे गरे गम् धऽ, मप गम् रेग मधऽ, धप मप गम् रेसा
सांनि धप मप गम् धनी सां, सांरें सांनी धप मप गम् रेग मध नीसां,
सांध नीसां धनी सांरे सांनी धप मप गम् गम् रेग रेग मध मप गम् धनी
गम धप मप गम् धनी सां

राग—हमीर ताल—एकताल (विलंबत)

रे सुरजा रही रे सुरझत नाही। उरझन को कैसे करे सुर झाऊं॥ धृ.॥
ऽड परी प्रेम की मुंद मुंद मुसकाय रही रे॥ १॥

अस्ताई

					ना
					रेऽ सुर
					पऽ गम्
धि	धिं	धागे	तिरकिट	तू	ना
		०		२	
जाऽ	रही	रेऽ ऽऽ	सुरझत	नाऽ हीऽ	ऽऽऽऽ
नीध	नीसां	नीध पप	परेगम्	धऽ पऽ	म्रेसाऽ

उरझन	कीऽ कैऽ	सेऽ कऽ	रेऽ झुर	झा	ऊंऽ झुर
सासागम्	नीध धनी	नीसां नीध	नीध नीध	प	पऽ गम्

अंतरा

					ना
					गड झ
					पप नी
धिं	धिं	धागे	तिरकिड	तू	ना
+		०		२	
पऽ ऽऽ	री	प्रेऽ मऽ	कीऽ ऽऽ	मुंऽ दऽ	मुंऽ दऽ
धनी सांसां	सो	नीऽ धऽ	नीऽ सांऽ	नीऽ धऽ	पऽ पऽ
क	ता	धागे	किरकिड	धीं	ना
०		३		४	
मुऽ ऽस	काऽ यऽ	रऽ हीऽ	रेऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ	ऽऽ झुर
मप धप	पऽ गऽ	नीऽ धऽ	धनी सांऽ	नीध पऽ	पऽ गम्

राग–हमीर ताल–त्रिताल (द्रुतलय)

घीट लंगरवा कैसे घर जाऊं। सुन पावे मोरि सास ननदिया, छांड दे मोहे ॥ धृ० ॥ हूं चली पनघटवा ठाडे। कौन बहाने प्यारे बलमा। छीन लई मोरी सीस गगरिया। बरजोरी पी आवे सुंदरवा। कैसे घर जाऊं ॥ १ ॥

अस्ताई

धा	तीं	तीं	ता	ता	धीं	धीं	धा	धा	धीं	धीं	धा	धा	धीं	धीं	धा
०				३				+				२			
घी	ऽ	ट	लं	ग	र	वा	ऽ	कैऽ	ऽ	ऽ	ऽ	सेऽ	ऽ	घ	र
प	ऽ	प	ध	म	प	ग	म्	नीध	ऽ	ऽ	ऽ	धनी	सां	सां	सां
जाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऊं	ऽ	सु	न	पा	ऽ	वे	ऽ	मो	रि
सांरें	सांनी	धप	मग	रेसा	सा	सा	ऽ	सा	सा	म	ग	प	ऽ	प	प
सा	ऽ	स	न	न	दि	या	ऽ	छां	ऽ	ऽ	ड	देऽ	ऽ	मो	हे
प	ऽ	प	ध	म	प	ग	म्	नी	ध	ऽ	नी	धनी	सां	सां	सां

अंतरा

धा	तीं	तीं	ता	ता	धीं	धीं	धा	धा	धीं	धीं	धा	धा	धीं	धीं	धा
+				२				०				३			
हूं	ऽ	ऽ	च	ली	ऽ	प	न	घ	ट	वा	ऽ	ठा	ऽ	डे	ऽ
प	ऽ	ऽ	प	सां	ऽ	सां	सां	सां	सां	सां	ध	सां	रें	सां	ऽ
कौ	ऽ	न	ब	हाऽ	ऽ	ने	ऽ	प्या	ऽ	रेऽ	ऽऽ	ब	ल	मा	ऽ
नी	ध	ध	नी	धनी	सां	सां	ऽ	ध	नी	धनी	सांरें	सां	ध	प	ऽ
छी	ऽ	ऽन	ल	ई	ऽ	मो	री	सी	ऽ	स	ग	ग	रि	या	ऽ
म्	ऽ	रेंरें	रें	सां	रें	सां	सां	नी	ध	नी	सां	नी	ध	प	ऽ

ब	र	जो	ऽ	रीऽ	ऽ	पी	ऽ	आ	ऽ	वे	सुं	द	र	बा	ऽ
प	प	प	ऽ	धनी	रें	सां	ऽ	ध	ऽ	प	ध	म	प	ग	मृ
कै	ऽ	ऽ	ऽ	सेऽ	ऽ	ध	र	धी	ऽ	ट	लं	ग	र	बा	ऽ
नी	ध	ऽ	ऽ	धनी	सां	सां	सां	प	ऽ	प	ध	म	प	ग	मृ

राग–हमीर ताल–एकताल (द्रुतलय)

मेंडेरे यार हां मीवे तपदिसी कैंदी जिनेना माने । तेंडेरे कारन में डेरे यार हां मीवे ॥ धृ० ॥ कमली रमली फिरदी सदारंग तुहिना मिला मेनू तेंडेरे कारन मेंडेरे यार हां मीवे ॥ १ ॥

अस्ताई

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	त्ता	धागे	त्रक	धी	ना
+		०		२		०		३		४	
						मैं	डे	रेऽ	या	ऽ	र
						प	प	धप	ग	ऽ	मृ
हां	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मीऽ	ऽ	वे	ऽ	ऽ	ऽ
नी	ध	ऽ	ऽ	नी	म	धनी	सां	सां	ध	प	ऽ
त	प	दि	सी	कें	ही	जि	ने	ना	मा	ऽ	ने
प	रे	ग	मृ	ध	प	ग	मृ	प	मृ	रे	सा
तें	डे	रे	का	र	न	मैं	डे	रेऽ	या	ऽ	र
प	नी	ध	सां	नी	ध	प	प	धप	ग	ऽ	मृ
हां	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मीऽ	ऽ	वे	ऽ	ऽ	ऽ
नी	ध	ऽ	ऽ	नी	म	धनी	सां	सां	ध	प	ऽ

अंतरा

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	त्ता	धागे	त्रक	धीं	ना
+		०		२		०		३		४	
क	म	ली	ऽ	र	म	ली	ऽ	फि	र	दि	स
प	प	सां	ऽ	सां	रें	सां	ऽ	नी	ध	नी	सां
दा	ऽ	रं	ग	तु	हि	न	भि	ला	ऽ	मे	तु
नी	ध	प	प	सां	गं	रें	मृं	गं	रें	सां	नी
तें	डे	रे	काऽ	र	नऽ	में	डे	रेऽ	या	ऽ	र
प	नी	सां	गंरें	सां	नीध	प	प	धप	ग	ऽ	मृ
हां	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मीऽ	ऽ	वे	ऽ	ऽ	ऽ
नी	ध	ऽ	ऽ	नीं	म	धनी	सां	सां	ध	प	ऽ

राग–हमीर धृपद, ताल–तेवरा (मध्यलय)

श्रीरामचंद्र कृपाल भजमन हरण भव भय दारुणं नव कंज लोचन कंज मुख कर कंज पद कं जारुणं ॥ धृ० ॥ कंदर्प अगणित अमित छबी नव नील नीरज सुंदर पट पीत मानहु तडीत रुचि शुचि नोंमि जनक सुता वरं ॥ १ ॥

अस्ताई

धा	दिं	ता	तिट	कत	गदि	गन	धा	दिं	ता	तिट	कत	गदि	गन
+			२		३		+			२		३	
					श्री	ऽ	रा	ऽ	म	चंऽ	ऽऽ	द्र	कृ
					सां	ऽ	सां	घं	प	पध	पप	ग	म

पा	ऽ	ल	भ	ज	म	न	ह	र	ण	भ	व	भ	य
ध	ऽ	रें	सां	नी	ध	प	ग	म्	ध	नी	ध	म	प
दा	ऽ	रु	णं	ऽ	न	व	कं	ऽ	ज	लो	ऽ	च	न
ग	ऽ	म्	ध	ऽ	ग	म	नी	ऽ	ध	नी	ध	नी	रें
कं	ऽ	ज	मु	ख	क	र	कं	ऽ	ज	प	द	कं	ऽ
सां	नी	ध	म	प	म	प	ग	म्	रे	ग	म्	ध	प
ना	ऽ	रु	णं	ऽ									
ग	म्	रे	सा	ऽ									

अंतरा

धा	**दिं**	**ता**	**तिट**	**कत**	**गदि**	**गन**	**धा**	**दिं**	**तिट**	**कत**	**गदि**	**गन**	
+			२		३		+		२		३		
					कं	ऽ	द	ऽ	पें	अ	ग	णि	त
					म	ऽ	नी	ऽ	ध	नी	ध	नी	रें
अ	मि	त	छ	बि	न	व	नी	ऽ	ल	नी	र	ऽ	ज
सां	नी	ध	नी	सां	नी	सां	सां	नी	ध	नी	ध	नी	रें
सुं	ऽ	द	रं	ऽ	प	ट	पीऽ	ऽ	त	सा	ऽ	न	हु
सां	नी	ध	म	प	नी	सां	पंगं	मं	रें	नी	ध	नी	रें
त	डि	त	रु	चि	शु	चि	नों	ऽ	मि	ज	न	क	सु
सां	नी	ध	नी	ध	म	प	ग	म्	रे	ग	म्	ध	प
ता	ऽ	व	रं	ऽ									
ग	म्	रे	सा	ऽ									

राग—हमीर ताल—एकताल (द्रुतलय)

दि दारा दिर दिर तेलेलाना । तन नितन तनतना तन तुंद्रे तद्रे दानी । दियन रे तदियन रे नितरेदानी तद्रेदानी । ओदानि ओदानि तदानि तदानि ...ोम् तनन तोम् तनन तोम् तनन ॥ धृ० ॥ तेले तेले नाना तेलेलेले नाना । लेलेलेलेलेलाना । नित नितान तन नितनना । नादिर दिर देर्ना तुं दिर दिर ...र्ना । तननननन तुं दिर दिर देर्ना । तननननन तुं दिर दिर देर्ना । तननननन ॥ १ ः।

अस्ताई

धीं	**धागे**	**त्रक**	**तू**	**ना**	**क**	**त्ता**	**धागे**	**त्रक**	**धीं**	**ना**
	०		२		०		३		४	
					दीं	ऽ	दा	रा	दिर	हिर
					प	म	ग	म	ध	ध
ले	ला	ना	त	न	नि	त	न	त	न	त
ध	नी	सां	सां	नी	ध	नी	ध	प	प	ध
ऽ	त	न	तुं	द्रे	त	द्रे	दा	ऽ	नी	ऽ
ऽ	म्	रे	प	प	म्	म्	रे	ऽ	सा	ऽ
दि	य	न	रे	ऽ	त	दि	य	न	रे	ऽ
सा	म्	ग	प	ऽ	प	प	नी	ध	प	ऽ
त	रे	दा	ऽ	नि	त	द्रे	दाऽ	ऽऽ	नी	ऽ
नी	ध	प	ऽ	प	प	प	मप	धप	म्	ऽ
दा	नि	ओ	दा	नि	त	दा	नि	त	दा	नि
म्	म्	रे	सा	सा	म्	म्	म्	रे	सा	सा
ऽ	ऽम्	त	न	न	तो	ऽ	ऽम्	त	न	न
ग	म्म्	रे	सा	सा	म	प	धध	प	म	प

तो	ऽ	ऽम्	त	न	न	दीं	ऽ	दा	रा	दिर	दि
ध	नी	सांसां	ध	म	प	प	म	ग	म	ध	

अंतरा

धिं	धिं	धागे	त्रक	तू	ना	क	त्ता	धागे	त्रक	धीं
+		०		२		०		३		४
ते	ले	ते	ले	ना	ना	ते	ले	ले	ले	ला
म्	रे	प	प	प	प	नी	ध	नी	सां	सां
ते	ले	ले	ले	ले	ले	ला	ना	नि	त	नि
सां	रें	सां	सां	ध	ध	प	प	प	प	ध
ऽ	न	त	न	नि	त	न	ना	ऽ	ऽ	ऽ
ऽ	प	प	प	ध	प	प	सां	ऽ	ऽ	ध
ना	दिर	दिर	दे	ऽ	र्नां	तुं	दिर	दिर	दे	ऽ
रें	म्	रें	प	ऽ	प	प	नी	ध	नी	सां
त	न	न	न	न	न	तुं	दिर	दिर	दे	ऽ
सां	म्	म्	गं	म्	रें	सां	सां	रें	सां	ऽ
त	न	न	न	न	न	तुं	दिर	दिर	दे	ऽ
प	प	सां	सां	सां	ध	प	प	ध	प	ऽ
त	न	न	न	न	न	दिं	ऽ	दा	रा	दिर
म्	रे	म	म	प	ध	प	म	ग	म	ध

राग–शंकरा

इस राग में रिषभ, गंधार, धैवत और निषाद यह स्वर तीव्र लगते हैं। मध्यम यह स्वर वर्जित है। आरोह में रिषभ वर्ज है परंतु अवरोह में लगता है। आरोह में गंधार को पंचम का स्पर्श हमेशा ले जाता है, नही तो कलावती राग का आभास निर्माण होता है। वैसेही रिषभ और धैवत दुर्बल हैं। दोनो स्वर पर ठहरना नहीं। इस लिये ग ऽरे सा और नी ऽध प ऐसा स्वर प्रयोग होता है। कोई आरोह में ग प नी ऽध सां और कोई ग प नी सां ऐसी स्वर संगती रखते है। यह राग रातके दूसरे प्रहरमें गाया जाता है। यह राग वीररस प्रधान है।

आरोह–सा ग प नी ऽध सां। सा ग प नी सां

अवरोह– सां नी ऽध प ग प रेग ऽरे सा

मुख्य अंग– सां नी प ग प रेग ऽरे सा ऽ प नी सा
ग प रेग ऽरे सा

जाती–ओडव –षाडव

वादी–गंधार

संवादी–निषाद

अस्ताई के आलाप

साऽऽऽ, नीसारेसा नीऽऽ, नीऽ धपऽऽ, पऽ नीऽ, प नी ध सा नीऽ, प, नी प सा नीरे सा नी ऽ, प नी ऽ नी सा.

प नी सा रे साऽ, नीसारेसारेसानीऽ, रेसानीसारेसानीऽ, सारे साऽ, रेनीऽ, रेसाऽ रेनीऽ, प नी प रे सा नी ऽ, नी ऽ सागऽ रेसा.

नी सा पग ऽऽऽ, पग ऽऽ, नी सा, सा गऽ, पनीऽ, पसा, नीसा नी गऽ, पगऽ रेसा.

सारेसानीसा पग ऽऽ, पगऽ, गरेसानी, रेसानीधपऽ, प पनीऽ, नी नीसा

सागऽ, पनीपनीसा नीसानीसा गऽ पगऽ रेसा.

सा पगऽ पग पऽऽ, पऽ गऽ, सा नीऽ, सापऽ गऽ, पनी नीसा साग गप ग

पधपप गऽ, पऽ रेगऽ रेसा.

सासा गग पऽ गऽ, पधपप गऽ, सारेसासा नीऽ, धपप गऽ, गप गध पप ग

धपप रेसासा धपप गऽ, ग नी ऽ धप ग ऽ प रेग ऽरे सा.

ग प ऽ प नीऽऽ, नीऽऽ नीऽ, प गऽ, ग नीऽ, ग प ग नीऽ, सा ग ग प प नीऽ

नी ऽ धप गऽ, प रेग ऽरे सा.

पगरेसानीसागपनीऽ, नीऽ, नीधपप गऽ, पगरेसा नीऽ, सासागग प गगपप नीऽ

पप नी, गग प, सासा ग, सासा प, सासा नी, सारेसासा पधपप नीसांनीनीऽ,

प नीऽनी सां.

अंतरेके आलाप

प नीऽ, सांनी ऽ सांनी ऽ सां ऽऽऽ, सांऽऽ, प नी, पसांऽ, सांऽ, गप गनीऽ,

पनी पसांऽ, सांऽ, सागगपपनीनीसांऽ.

पधपपगपनीसांपनीसांऽ, सांऽ नीधपप गपनीऽ, नीधपप गपसांऽ, सा साग ग गप

प पनी नी नीसां, गपगनीपनीऽ, पनीपसांनीसांऽ, गपग, पनीप, नीसांनी

सांरेंऽ सां.

गपनीसांरेंऽ सांऽ, सांऽ नीऽ, सांरें ऽ सांऽ, सांऽ नीसांरेंसांनीऽ, रेंसांनीऽ,

धपगऽ, रेंसांनीऽ, पनीपसांनीरसांऽ, रेंनीऽ, रेंसांऽ, रेंनीऽ, पनीसां गं ऽरें सांऽ.

प नी सां गंऽऽ, गंऽऽ, गं ऽरें सांनीऽ पगऽ, गपनीऽ नीसांगंऽ गपपनीनीसां

सांगंऽ, गं ऽपं रेंगं ऽरें सां.

अस्ताई की ताने

सासा गग रेसा नीसा, गग पप गरे सासा, गप गप गरे सासा, पग पप गरे

सासा.

सासा गग पप गप गरे सासा, गग पप नीध पप गरे सासा, नीध पप गप गप

गरे सा, सांरें सांनी धप गप गरे सासा, गप नीध पप गप गरे सा.

गप नीसां नीध पप गग पप गरे सासा, पप गरे सा नीध पप गप गरे सा

नीध नीसां नीध प गग प गरे सा, पनी सांरें सांनी धप गप गप गरे सा

सागं रेंसां नीरें सांनी पध पप गरे सा.

पनी साग रेसा सासा गग पप गप नीध नीसां सांरें सांनी धप नीसां नीध प

गप गरे सासा, पग प गरे सा नीध नी पप ग सांनी सां नीध प रेंसां गं रें

नी रें सांनी धप सां नीध पग प गरे सा, ग प नी सां गं रेंसां नीध पप

प नी सां रें सांनी धप ग प नी सां नीध पप ग प नी पप ग प गरे सा,

अंतरेकी तानें

पध पप गप नीसां, गप नीसां पनी सां, गप नीध सांनी रेंसां, पप नीसां गं
सांसां, पनी पसां नीरें सां, पनी सांगं रेंसां नीसां.

गग पप नीनी पप नीनी सां, पप नीनी पप सांसां नीसां रेंसां, सांरें सांनी ध
गप नीध सां, रेंसां नीध पप गप सांनी रेंसां.

गप नीसां पनी सां पनी सां पनी सां, पनी सांरें सांनी धप गप नीसां रें सां
गप नीसां गंरें सांनी धप गप नीध सां, पप गग नीनी पप सांसां नीनी रेंरें सां
प ग प गरे सा, नी प नी पप गऽ, रें सां रें सांसां नीऽ, पनीनी पसांस
नीरेंरें सांनीधप गपनीसां

गगग पपप गरेसा, पपप सांसांसां नीधप, नीसांसां गंगंरें सांसांनी, पसांसम
नीधप, गपप गरेसा.

राग–शंकरा ताल–तिलवाडा. (मध्यलय)

माथे तिलक धरे हो बैरागी। आज जो जोगी चले हों बिदेस ॥ धृ०॥
झाड कमरिया डाल कंधे पर। कहां चले हो बिदेस ॥ ना काहुं के तुम। ना
कोऊं तुम्हरे ॥१॥

अस्ताई

धा त्रक धीं धीं धा धा तीं तीं ता त्रक धीं धीं धा धा धीं धीं
\+ २ ० ३

माऽ थेऽऽऽ तिऽ लक
नीध सांरेंसांसां नीध नीनी

धऽऽ ऽ रे ऽ होऽऽ ऽ ऽ बेऽ राऽ ऽ गी ऽ आ ऽ ज जो
धपप ग प नी धपप ग ऽ गप रेग रे सा ऽ प ध्नी सा सा

जो ऽऽ गी ऽऽ चऽ लेऽऽ हो बिऽ देऽ ऽ स ऽ
सा गप ग रेसा नीनी धपप ग गप रेग रे सा ऽ

अंतरा

धा त्रक धीं धीं धा धा तीं तीं ता त्रक धीं धीं धा धा धीं धीं
\+ २ ० ३

झा ऽ ड क
प ऽ सां सां

म रि या ऽ डा ल ऽ कंऽ धेऽ ऽ प र क ऽ हां चऽऽ
सां सां सां ऽ सां गं ऽ गंपं रेंगं रें सां सां सां ऽ सां गंरेंसां

ले ऽ होऽऽ ऽ ऽ ऽ ऽ बि देऽऽ ऽऽ ऽऽ स ना ऽ काऽ हुंऽ
नी ऽ नीधप ऽ ग प ऽ नी धपप गप गरे सा सां ऽ गंरें सांऽ

के ऽ तुऽऽ म ना ऽ को ऊंऽऽ तुऽऽ म्हऽ ऽ रे
नी ऽ धपप प प ऽ सां नीधप पगप रेग रें सा

राग–शंकरा ख्याल ताल–अध्धा (विलंबित लय)

सोजा तुरजानु बालमूवा। देखे तेहारी प्रीतके लछन ॥धृ०॥
उतर बनावत बन नही आवत। काहे देत सब प्रीतके बचन ॥

अस्ताई

धा धिं ऽऽऽत धिं धा धिं ऽऽऽत धिं धा तीं ऽऽऽत तीं ता धिं ऽऽऽत धिं

\+ २ ० ३

सो जा ऽऽऽऽ नुर

नी सां नीऽसांऽ धर्न

जा ऽ ऽऽऽऽ ऽऽऽऽ न् ऽ ऽऽऽबा ऽऽलऽ म् ऽऽऽऽ बा ऽ दे खे तेऽ हाऽ

प ऽ पऽनीऽ धऽसांऽ नी ऽ ऽधपप गऽपऽ ग ऽऽऽरे सा ऽ सा ग पग पग

ऽ री ऽ प्रीऽऽऽ ऽऽऽऽ त केऽऽऽ ऽऽऽल छऽ ऽऽ न ऽ

प प ऽ पनीसांरें नीरेंसांसां नी पधपप गऽऽग रेग ऽरे सा ऽ

अंतरा

धा धिं ऽऽऽत धिं धा धिं ऽऽऽत धिं धा तीं ऽऽऽत तीं ता धिं ऽऽऽत धिं

\+ २ ० ३

उ त ऽऽरऽ ऽऽऽब

ग प ऽऽसां ऽऽऽसां

ना ऽ व त ब न ऽन हीऽ आ ऽऽ वऽऽऽ त ऽ का है ऽऽ

सां ऽ गं सां सां गं ऽगं गंपं गं रेंसां नीसांरेंसां नी ऽ नी सां सांगं

दे ऽऽ त स ब प्रीऽऽऽ ऽऽऽऽ त ऽके ऽब च ऽ न

गं रेंसां नी प प पनीसांरें नीरेंसांसां नी धप गप ग ऽ सा

राग-शंकरा ताल-त्रिताल (द्रुतलय)

करना हो सो करले प्यारे । जनम जात दिन रैन सवारे ॥धृ०॥

जोबन कछु स्थिर नहीं है । चलन हो सो चेत संवारे ॥१॥

अस्ताई

तीं तीं ता ता धीं धीं धा धा धीं धीं धा धा धीं धीं धा

३ + २

र ना ऽ हो ऽ सो ऽ क र ले ऽ प्याऽ ऽ रे ऽ

सा ग ऽ प ऽ सां नी प प ग प गरे सां सां सां

न म जा ऽ त दि न रै ऽ न मऽ वाऽ ऽऽ रेऽ ऽऽ

नी प सा ऽ सा ग ग प ऽ ग गप रेग ऽरे सारे सासा

अंतरा

तीं तीं ता ता धीं धीं धा धा धीं धीं धा धा धीं धीं धा

३ + २

न जो ऽ ब न क छु स्थि ऽ र न हीऽ ऽऽ है ऽ

प सां ऽ सां सां सां सां सां ऽ सां सां नीसां रेंसां नी ऽ

ल ऽ न हो ऽ सोऽ ऽ चे ऽ त सऽ वाऽ ऽऽ रे ऽ

नी ऽ नी सां नी धप प प ऽ ग गप रेग ऽरे सा सा

राग–शंकरा ताल–त्रिताल (द्रुतलय)

अनहत आद नाद को । पार न पायो, पछ हारी गुनी ग्यानी ।।धृ।।
बलहारी उन गुरुनकी । जीनो ये भेद बखाने ।।१।।

अस्ताई

धा तीं तीं ता ता धीं धीं धा धा धीं धीं धा धा धीं धीं

० ३ + २

अ न हऽ त आ ऽ ऽ ऽ द ना ऽ

रें सां नीध नी प ऽ ऽ ऽ प नी ध

को ऽ ऽ ऽ अ न हऽ त आ ऽ द ना ऽ द को

नी ऽ ऽ ऽ रें सां नीध नी प ऽ प नी ध सां नी

पा ऽ र न पा ऽऽ यो ऽ प छ हा ऽ री ऽ गु

प ऽ ग प ग ऽरे सा ऽ सा सा ग ऽ प ऽ नी

ग्याऽ ऽऽ ऽऽ नी

पप नीसां गरें सां

अंतरा

धा तीं तीं ता ता धीं धीं धा धा धीं धीं धा धा धीं धीं

० ३ + २

ब ल हा ऽ री ऽ ऽ उ न गु रु

प प सां ऽ सां ऽ ऽ सां सां नी नी

की ऽ ऽ ऽ जी ऽ नो ऽ ये ऽ ऽऽ ऽ भे ऽ द

नी ऽ ऽ ऽ सां ऽ गं पं गं ऽ ऽरें सां नी ऽ प

खाऽ ऽऽ ऽऽ ने

पप नीसां गरें सां

राग–शंकरा तराना, ताल–त्रिताल (द्रुतलय)

तों तनन तन देरेना तारेदानी । दिर दिर दिर तान तन दीं तन देरेना।
लीयाले यलीयाले दृतन देरेना दृतन देरेना ।।धृ०।। धेतेले धेतेलेलाना
तेलाना धेतेलाना । दृगनारे दृगनारे दीं तन देरेना ।।१।।

अस्ताई

ा धीं धीं धा धा धीं धीं धा धा तीं तीं ता ता धीं धीं धा

२ ० ३

तों ऽ त न न त न दे ऽ रे

नी ध रें सां नी प प नी ध सां

ा ऽ ऽ ऽऽ ऽ ता ऽ रे दाऽ ऽ ऽ ऽ नी ऽ ऽ ऽ

ी ऽ ऽ नीध प ग ऽ प रेग ऽ ऽ रे सा ऽ ऽ ऽ

देर दिर दिर ता ऽ न त न दीं ऽ त न दे रे ना ऽ

ा सा सा ग ऽ ग प प ग ऽ ग प ग रे सा ऽ

ी ली या ले य ली या ले द त न दे ऽ रे ना ऽ

ी ध नी सां नी ध प प प नी ध प ऽ प ग ऽ

द ऽ न देऽ ऽ रे ना ऽ त न न त न दे ऽ रे

ा ग प रेग ऽ रे सा ऽ रें सां नी प प नी ध सां

ना ऽ ऽऽ ऽ ता ऽ रे

ी ऽ ऽ नीध प ग ऽ प

अंतरा

धा धीं धीं धा धा धीं धीं धा धा तीं तीं ता ता धीं धीं
\+ २ ० ३

धे ते ले धे ते ले ला
प प सां सां सां सां सां

धे ते ला ना धे ते ला ना द्द ग ना रे द्द ग ना
प प नी सां गं रें सां सां नी सां नी ध नी ध प

दीं ऽ त न दे रे ना ऽ त न न त न दे ऽ
प ग ग प ग रे सा ऽ रें सां नी प प नी ध

राग–पुरीया

राग पुरिया, मारवा और सोहनी के आरोह और अवरोह में स्वर एक हैं। लेकिन उनके वादी–संवादी, पूर्वांग–उत्तरांग प्रधान, समय, पद्धती चलन इनकी सहायतासे हम तीनों राग अलग रख सकते हैं। आलापी में राग का चलन वक्र रहता है। उदा. नी रे् ग म धग म ऽ ग ऽ नी रे् सा, म ध नी म धग म ग ऽ, म ध नी रें् ध नी म ध ग म ग ऽ नी रे् इस में रिषभ, धैवत, अबरोही और दुर्बल होने के कारण वे जादा से जा दीर्घ काल लेना सम्भव नहीं होता है। नी ध म ग ऐसी अवरोही रच तथा म ग, म ग और नी ध, नी ध सोहनी राग टालने के लिये ले नहीं चाहिये। यह राग में रिषभ कोमल और बाकी स्वर तीव्र हैं समय रातका पहला प्रहर.

आरोह–नी रे् ग म ध नी सां
अवरोह– सां नी ध म ग रे् सा
मुख्य अंग– नी रे् ग म धग म ग, नी रे सा.
ग म ध नी म धग म ग, नी रे् सा.

जाती–षाडव
वादी–गंधार
संवादी–निषाद

पलटा

१) नी रे् साऽ, नी रे् ग नी रे् साऽ, नी रे् ग म रे् ग नी रे् साऽ नी रे् ग म ध ग म रे् ग नी रे् साऽ, नी रे् ग म ध नी म ध ग म रे् ग नी रे् साऽ, नी रे् ग म ध नी सां ध नी म ध ग म रे् ग नी रे् साऽ, नी रे् ग म ध नी रें् ध नी म ध ग म रे् ग नी रे् साऽ, नी रे् ग म ध नी रें् गं नी रें् ध नी म ध ग म रे् ग नी रे् साऽ

२) नी रे् नी सा, नी रे् नी ग नी रे् नी सा, नी रे् नी ग रे् म रे् ग नी रे् नी सा, नी रे् नी ग रे् म ग ध ग म रे् ग नी रे् नी सा, नी रे् नी ग रे् म ग ध म नी म ध ग म रे् ग नी रे् नी सा, नी रे् नी ग रे् म ग ध म नी ध सां ध नी म ध ग म रे् ग नी रे् नी सा, नी रे् नी ग रे् म ग ध म नी ध सां नी रें् नी सां ध नी म ध ग म रे् ग नी रे् नी सा

अस्ताई आलाप

१) साऽऽऽ, नीरे्सानी ऽऽ, नीऽ धऽ नीऽ, ध नी ध सा नीऽ, ध नी रे् ध नीऽ, नी ध सा नी रे्ऽ साऽ

२) नी रे गऽऽ, गऽऽ नीऽ, रेग रे साऽ, नी रे नी गऽ, गऽ, ध
नी नी रे रे गऽ, रे ग नी रे ध नी रे नी रे गऽ, ग नीऽ रेसा

३) नीरेगरेनीरेगऽ, गऽ गरेसानीऽ, धनीधनीरे नीरेनीरेगऽ,

धनीसानीधनी नीरेगरेनीरे गऽ, गरेसानीधनीरेगनीरेगऽ नी रे म ऽ
गऽ नी रे सा

४) नी रे गऽ रे मऽऽ, मऽ रे गऽ, रे मऽ, नीरे नी गऽ, नी रे
नी मऽ, ग ऽम रे ऽग नी ऽरे ध नी रे ग म ऽ, म ऽ ग ऽ, नी रे
साऽ

५) नीरेगमगरेगमऽ, मऽ गमगरेनीऽ, गगरेनीरेगऽ, ममगरेगमऽ,
गमगम रेगरेग नीरेनीरे धनीधनीरे नीरेनीरेग रेगरेगमऽ,
म ऽध ग मऽ ग, नी रे सा

६) ग म नीधऽ नीधऽ नी ऽऽ, नी ऽऽ म ध म नीऽ, नीऽऽ नीऽ,
म ग ध म नीऽ, ग म म ध ध नीऽ, नीऽ म धग म ग नी रे सा

७) मगरेसानीरेगमधनीऽ, नीऽ नीधमग, मगरेनीऽ, नीरेगम
रेगमध गमधनी मधनीऽ, गमग मधम धनीध नीऽ, म ध नी सांऽ

अंतरा आलाप

१) ग म ध नीऽ, नी ऽ सां ऽऽ, सां ऽऽ, ध नीऽ, ध सां ऽ, म ध
म नीऽ, म ध म सांऽ, सांऽ नीऽ मग धम नीध नीऽ सांऽ

२) मगरेसानीरेगमधनीसांऽऽ, सांऽ, धनीध मधम गमग नीरेसाऽ,
नीरेगम रेगमध गमधनी मधनीसांऽ गमधमगमध, मधनीधमधनी,
धनीसांनीधनीसांऽ ध नी रें सांऽ

३) सांऽऽ, नी रेंऽ सांऽ, धनीधसांनीरेंसांऽ, नीरेंसांनीधनीऽ, ध नी
ध रेंसांऽ रेंनीऽ, रेंसांऽ, रेंनीऽ, ध नी रें गंऽ नी रें सांऽ

४) नी रें गंऽऽ, गंऽऽ नीऽ, गं रें सांऽ, नीरेंऽ नी गंऽ, गंऽ, म ध
नीऽ, नीरेंगंऽ, ध नी नी रें रें गंऽ, गंऽ, नीऽ रें सांऽ

५) धनीरेंगंरेंनीरेंगंऽ, गंऽ, गंरेंनीऽ, नीधमऽ, धमगऽ, गमगमध
मधमधनी धनीधनीरें, नीरेंनीरेंगंऽ, ध धनी, नी नीरें रें रेंगंऽ,
गंऽ नीऽ रें सांऽ

अस्ताई ताना

नीरे गम गरे सा, मम गम गरे सा नीरे मग मग रेसा, नीध मग
मग रेसा, सांनी धम गरे सा

नीरे गम धम गम गरे सा, मग रेसा नीध मग मग रेसा, गम
धनी धम गम गरे सा, नीरे गम धनी मध गम ग

नीरे गम धनी सांनी धम गम गरे सा, गम गरे सा धनी
मध गम गरे सा, गम धनी रेंनी धम गम धम गरे सा,
नीरे गम धनी रेंगं रेंसा नीध मग रेसा

मम गम गरे सा नीनी धनी धम ग रेंरें नीरें नीध म
नीनी धम गरे सा. नीरे मग मग रेसा गम नीध नीध मग
मध रेंनी रेंनी धम गम धम गरे सा. नीरे गम धम गम
धनी सांनी मध नीरें गरे नीरें नीध धनी धम गरे सा.
मग म गरे सा नीध नी धम ग रेंनी रें नीध म नी धम
गरे सा. नीरे मग मग रेसा गम नीध नीध मग धनी रेंनी
रेंनी धम गम धम गरे सा.

अंतरा ताना

गम धनी मध नीसां, मग धम नीध सां, धनी धसां नीरें
सां, नीरे गम धनी सां, गम धनी रेंगं रेंसां,

गम धनी मध नीसां धनी रेंसां, नीरे गम धम गम धनी
सां, गम धनी रेंगं रेंसां नीरें सां, गम गध मनी धसां नीरें सां,

नीरें नीध मग रेसा नीरे गम धनी सां, मग रेसा नीध
मग रेंनी धम गम धनी, गम धनी रेंगं नीरें धनी मध गम
ग, नीरें नीध नीध मध मग मग मध नीसां.

अस्ताईके लिये स्वरपर ठहरनेके बाद ताना लेना

(सा) मम गम गरे साऽ, धनी धसा नीरे साऽ, नीरे मग
मग रेसा, गम गम गरे साऽ, गम मग मम गरे सा,
मग मग मग रेसा, रेग गरे मम गम गरे सा,

(ग) नीरे गरे नीरे गऽ, धनी रेग नीरे गऽ, नीरे नीग रेम
गऽ, धनी नीध रेंरे नीग गऽ, धनी धनी रेंनी रेगऽ,
गग मम रेंरे गग नीनी रेंरे धध नीनी रेंरे गऽ

(नी) गम धनी मध नीऽ, नीध मग मग रेंनीऽ, नीरे गम
रेग मध गम धनी मध नीऽ, धनी धनी मध मध गम
गम रेग रेग मग मध मध नीध नीऽ, धध नीऽ मम
ध गग म रेंरे ग गरे रेम गग धम मनी धध नीऽ,
गग रेंरे मम गग धध मम नीनी धध नीऽ.

(सां) गम धनी मध नीसांऽ, धनी धसां नीरें सांऽ, नीरें सांनी
धम गम धनी सांऽ, मम गध धम नीनी धसां सांनी
रेंसांऽ, धध धनी नीनी सां मम मध धध नी गग गम
मम धध धनी नीनी सांऽ.

राग पुरिया–(विलंबीत एकताल)

फुलन के हरवा गुंदे लावोरी मालनीया । दारू बनेके गरूवा ॥धृ०॥
ीर मुकुट सीस । सेहेरा बिराजे । बनरी के गजरे मख तुला ॥ १

अस्ताई

		धिं	ना
		४	
ऽऽ	ऽफु	लन	ऽके
	ऽप	गरे	सानी

धिं	धिं	धागे	तिरकिड	तू	ना
+		०		२	
इ	इ वा	गुं दे	ला	बोऽ रीऽ	माऽ ल
नी	रे सा	नी ध	सा	नीरे गऽ	मग नी

क	ता	धागे	तिरकिड	धीं
०		३		४
याऽ दाऽ	रूब नेऽ	केऽ ऽऽ	गऽ रुऽ	वाऽ ऽफु
साऽ नीरे	गरे गऽ	धग मग	मग नीरे	साऽ नीम

अंतरा

धिं	ना
४	
मोऽ रऽऽऽ	ऽमुकु
मध मधनीसां	ऽसां स

धिं	धिं	धागे	तिरकिड	तू	ना
+		०		२	
सीस	स	सेह राबि	राऽऽऽ ऽऽ	जे ऽऽ ऽऽ	बन
रेंसां	सां	सांसां नीध	सांसां नीध नीऽ	म धग मग	नींनी

क	ता	धागे	तिरकिड	धीं
०		३		४
कैऽ गज	रेऽऽऽ	मख तूऽ	लाऽ ऽऽ	ऽऽ ऽफु
गऽ गग	मधनीरें	नीध मध	मऽ गऽ	नीरे साम

राग-पुरिया ताल–त्रिताल (द्रुतलय)

ठुमके पग पायल बाजीवे झननन ॥धृ०॥ जे हारे ते हारे अनहत बिछुवे । घुंगरूवा बाजे झननन ॥१॥

अस्ताई

धा	तीं	तीं	ता	ता	धीं	धीं	धा	धा	धीं	धीं	धा	धा	धीं	धीं	धा
०				३				+				२			
			ठु	म	के	प	ग	पा	ऽ	ऽ	ऽ	य	ऽ	ऽऽ	ऽऽ
			म	ग	रे	नी	रे	सा	ऽ	ऽ	ऽ	सा	ऽ	निसा	रेसा
ल	ऽ	ऽ	ठु	म	के	प	ग	पा	ऽ	ऽ	ऽ	य	ऽ	ऽऽ	ऽऽ
नी	ऽ	रे	म	ग	रे	नी	रे	सा	ऽ	ऽ	ऽ	नी	ऽ	रेग	मध
लऽ	ऽ	ऽ	ऽ	बा	ऽ	जीऽ	ऽऽ	वेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	झऽ	ऽऽ
गम	ऽ	ग	ऽ	ग	ऽ	मध	नीरे	धनी	ऽ	म	ऽ	ध	ग	गम	धम
नऽ	नऽ	न													
गम	गरे	सा													

अंतरा

धा तीं तीं ता ता धीं धीं धा धा धीं धीं धा धा धीं धीं

० ३ + २

जे ऽ हाऽ ऽऽ रे ऽ ऽ ऽ ते ऽ हा

म ऽ मध नीसां सां ऽ ऽ ऽ सां ऽ नी

रे ऽ ऽ अ न ह ऽ तऽ बिऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ छु

सां ऽ ऽ नी ध नी ऽ नीरे धनी ऽ ऽ म ध ग म

वे ऽ ऽ ऽ ऽ घुं ग रू वा ऽ बाऽ ऽऽ ऽऽ जेऽ झऽ

ग ऽ ऽ ऽ ऽ रे ग रे ग ऽ गम धनी रेनी धम गम

नऽ नऽ न

गम गरे सा

राग-पुरिया ताल–त्रिताल (द्रुतलय)

श्याम सुंदर रे। बिनती करत हूँ, पैय्या परत हूँ ॥धृ०॥

नाहक तुमने धूम मचाई। फेकत अबीर गुलाल लाल चहूँ ॥१॥

अस्ताई

धा तीं ती ता ता धीं धीं धा धा धीं धीं धा धा धीं धीं

० ३ + २

शा ऽ म सुं ऽ दऽ ऽ र रे ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

म ऽ ग म ग सानी ऽ रे सा ऽ ऽ ऽ नी रे सा

बि न ती क र त हूं ऽ पै ऽ या प र त हूं ऽ

नी रे ग म ध नी म ध म ऽ ग म ग रे सा ऽ

अंतरा

धा तीं ती ता ता धीं धीं धा धा धीं धीं धा धा धीं धीं ना

० ३ + २

ना ऽ ह क तु मऽ नेऽ ऽ धू ऽ म म चा ऽ ई ऽ

म ऽ ग ग म धम धनी सां सां ऽ सां सां नी रें सां ऽ

फे ऽ क त अ बि र गु ला ऽ ल ला ऽ ल च हूं

नी ध नी रें नी ध म ध म ऽ ग म ग रे सां सा

राग–पुरिया ताल–त्रिताल (द्रुतलय)

तों तनन तनन तन देरेना। तन देरेना तनना देरे देरे तनन नितनन नितनन देरेना तननन देरेना देरेना दीं तना दीं दीं तनन ता दीं दीं दीं तनन। दीं तननन देरेना देरेना देरेना दीं तना दीं दीं तनन दिर दिर दिर दिर दानी ॥धृ०॥ ना दिर दिर धितिलाना दीं तननन दी तननन नितनन नितनन नितारे तन नितारे तन ना दिर दिर तुं दिर दिर धेत्लां तुं दिर दिर धेत्लां तुं दिर दिर दिर दिर दिर दिर दानी ॥१॥

अस्ताई

धा तीं तीं ता ता धीं धीं धा धा धीं धीं धा धा धीं धीं धा

२ ० ३ +

ऽ ऽ तों ऽ त न न त न न त न दे रे ना ऽ

ऽ ऽ म ऽ ग म ग रे नी रे सा सा नी रे सा ऽ

ऽ ऽ त न दे रे ना ऽ ऽ ऽ त न ना दे रे
ऽ ऽ सा सा रे सा नी ऽ ध ऽ सा नी रे ग रे
रे त न न नि त त न नि त त न दे रे ना
रे सा सा नी रे सा सा सा रे सा सा सा नी नी नी
त न न न दे रे ना दे रे ना दीं ऽ त ना ऽ
नी नी ध ध ध म ध सा नी रे सा ऽ ग रे ऽ
दीं त न न ता दीं ऽ दीं दीं ऽ त न न दीं ऽ
ग रे सा सा नी नी ऽ नी रे ऽ ग ग म ध ऽ
न न न न दे रे ना ऽ दे रे ना ऽ दे रे ना
म म ग ग नी नी रे ऽ ग ग म ऽ म म म
ऽ त ना ऽ दीं ऽ दीं ऽ त न न ऽ दिर दिर दिर
ऽ ध म ग म ऽ म ऽ म ग ग ऽ म म ग

दा नी
सा सा

अंतरा

धा धीं धीं धा धा धीं धीं धा धा तीं तीं ता ता धीं धीं

\+ २ ० ३

ना दिर दिर धि ति ला नां ऽ दीं ऽ त न न न दीं
ग ग ग म म ध ध म ध सां सां सां सां सां सां
त न न न नि त त न नि त त न नि ता ऽ
सां सां सां सां नी रे नी ध म नी ध म ग ग ऽ

त न नि ता ऽ रे त न ना दिर दिर तुं दिर दिर धे त्लां
ग रे ग ग ऽ म ग रे ग ग ग म म म म ध
ऽ तुं दिर दिर धे त्लां ऽ तुं दिर दिर धे त्लां ऽ तुं दिर दिर
नी ध म म म ध ऽ म ग ग ग म ऽ म ग म
दिर दिर दिर दिर दा नी
ग रे सा सा सा सा

राग–सोहनी

इस रागमें गंधार, मध्यम, धैवत और निषाद यह स्वर तीव्र लगते हैं। ऋषभ यह स्वर कोमल है। इस में पंचम स्वर वर्जित है। गायक लोग कभी कभी कोमल मध्यमभी लगाते हैं। यह राग रातके तीसरे प्रहर में गाया जाता है। और प्रायः तार सप्तक में गाया जाता है। यह राग गंभीर और वीर रस प्रधान है। पुरिया और मारवा राग से यह राग अलग रखना चाहिये।

आरोह—सा ग म ध नी सां

अवरोह—सां नी ध म ग रे सा

मुख्य अंग— सा ग म ध नी सां नी ध नी ऽ ध म ग
ऽ म ग रे सा

जाती–औडव–षाडव

वादी–निषाद

संवादी–गंधार

सुरावट, ताल–त्रिताल (द्रुतलय)

धा तीं तीं ता ता धीं धीं धा धा धीं धीं धा धा धीं धीं ध

० ३ + २

सा ग ऽ म ऽ ध म ध नी ऽ सां ऽ ऽ ऽ सां नी

ध नी ऽ म ऽ ध म ध सां नी ध म ग रे॒ सा ऽ

ग ऽ म ध म ध म ध नी सां ऽ नी ऽ रें॒ सां ऽ

रें॒ ऽ सां सां सां ऽ नी ध नी ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ध नी

सां गं ऽ सां गं ऽ मं ऽ गं मं गं रें॒ सां ऽ सां ऽ

नी सां नी सां ध नी म ध सां नी ध म ग रे॒ सा ऽ

राग–सोहनी त्रिताल (द्रुतलय)

काहे अब तुम आये हो मेरे दुवारे। सौतन संग जागे अनुरागे र
पागे भागे ।।धृ०।। मिठी-मिठी बतियां करोना मनरंग तुम। वहीं जाव
जिनके छतियन सों लागें ।।१।।

अस्ताई

धा तीं तीं ता ता धीं धीं धा धा धीं धीं धा धा धीं धीं ध

० ३ + २

का ऽ हे अ ब तु म आऽ ऽ ऽ येऽ ऽ हो मे

ऽ सां ऽ रें॒ सां नी ध म धनी सां ऽ नीध ऽ नी ध

रे ऽ दु वाऽ ऽऽ रे ऽ सौ त न सं ग जा ऽ गे

ग ऽ म गम गरे॒ सा ऽ सा नी॒ सा ग ग म ऽ ग

नु राऽ ऽऽ ऽ गे ऽ र स ऽ ऽ पा ऽ गे भाऽ ऽऽ

ग मध नीसां ऽ नी ध नां ध ऽ ग ग ऽ म गम गरे॒

का ऽ हे अ ब तु म आऽ ऽ ऽ येऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

सां ऽ रें॒ सां नी ध म धनी सां ऽ नीध ऽ ऽ ऽ ऽ

अंतरा

ा तीं तीं ता ता धीं धीं धा धा धीं धीं धा धा धीं धीं धा

३ + २

ठी मि ठी ब ति यां क रो ना म न रं ग तु म

ध म ध सां सां सां रें॒ सां रें॒ सां रें॒ सां नी ध नी

हो ऽ जा ऽ बो जि न के छ ति य न सों लाऽ ऽऽ

मं ऽ गं रें॒ सां सां नी ध नी ध म ग म गम गरे॒

का ऽ हे अ ब तु म आऽ ऽ ऽ येऽ ऽ

सां ऽ रें॒ सां नी ध म धनी सां ऽ नीध ऽ

राग–सोहनी ताल–त्रिताल (द्रुतलय)

ोबन मद भर आयी आयी रे। सास गरवा। काहूकी रीत प्रीत ।।धृ०।।
हेले पहेले आये मंदरमे। बात करत है। कलकी रातकी ।।१।।

अस्ताई

धा तीं तीं ता ता धीं धीं धा धा धीं धीं धा धा धीं धीं

० ३ + २

जो ऽ ब न म द भ र आ ऽ यी आऽ ऽऽ यी रे

म ऽ ग ग म ध नी रें सां ऽ सां नीसां रेंसां नी ध

सा ऽ स ग रे वा ऽ ऽ का हू की रीऽ ऽऽ त प्री

ग ऽ म ग रे सा ऽ ऽ सां सां सां धनी रेंसां ध म

अंतरा

धा तीं तीं ता ता धीं धीं धा धा धीं धीं धा धा धीं धीं

० ३ + २

प हे ले प हे ले ऽ ऽ आ ऽ ये मं द र मे

ध म ध सां सां सां ऽ ऽ रें ऽ सां सां ध नी ध

बा ऽ त क र त है ऽ क ल की राऽ ऽऽ त की

नी रें गं मं गं रें सां ऽ सां सां सां धनी रेंसां ध म

राग–सोहनी तराना ताल–त्रिताल (जलदलय)

दीं तनन दिर दिर तानों तदेर्ना तन देरेना। देरेना दीं दीं ततदीं देरेना तदारे तद्रे दानी। तदीं तननंनन दिर दिर दिर दिर दिर दिर ॥धृ०॥ नादिर दिर तननंनन तुंदिर दिर तननंनन तदीं तननंनन तदीं ननन। थुगुन नगन तक तक तक धित्ता तिटकत गदिगिन धा तिटकत गन धा तिटकत गदिगन धा॥ १ ॥

अस्ताई

तीं तीं ता ता धीं धीं धा धा धीं धीं धा धा धीं धीं धा

३ + २

दीं ऽ त न न दिर दिर ताऽ ऽ ऽ नों ऽ त दे ऽ

सां ऽ रें सां नी ध म धनी सां ऽ नी ध नी ध ऽ

ऽ त न दे रे ना ऽ दे रे ना दीं ऽ दीं ऽ त

ऽ म म ग रें सा ऽ सा नी सा म ऽ म ऽ रें

दीं ऽ त न दे रे ना त दा ऽ रे त द्रे दा ऽ

सां ऽ नी ध नी म ध रें नी ध नी ध म म ऽ

दीं ऽ त न न न न दिर दिर दिर दिर दिर दिर दा ऽ

गं ऽ मं गं रें सां सां ध नी ध म ग म ग रें

दीं ऽ त न त दिर दिर

सां ऽ रें सां नी ध म

अंतरा

तीं ती ता ता धीं धीं धा धा धीं धीं धा धा धीं धीं धा

३ + २

ना दिर दिर त न न न न

ग ग ग ग म ध म ध

दिर दिर त न न न न त दीं ऽ त न न न न

सां सां सां सां रें सां सां सां मं ऽ गं रें सां सां सां

त दीं ऽ त न न न न थुगु नन गन तक तक तक धि
ध नी ऽ ध म म ग ग ग ग ग ग म ध नी
तिट कत गदि गन धा ऽ तिट कत गदि गन धा ऽ तिट कत गदि
नी सां नी सां नी ध ध नी ध म म ऽ ग म ग
धा दीं ऽ त न न
सा सां ऽ रें सां नी

राग–देसकार

इस रागमे रिषभ, गंधार और धैवत यह स्वर तीव्र लगते हैं । मध्
और निषाद वर्जित है । इस रागमे धैवत वादी होने से भूप रागसे अ
होता है । पंचम पर न्यास होता है । धैवत आंदोलित और षड्जको स्
करता है । यह राग गंभीर रस प्रधान है । राग समय–दिनका प्रथम प्रह

आरोह–सा रे ग प ध सां	जाती–औडव
अवरोह– सां ध प ध ऽ प ग रे सा	वादी–धैवत
मुख्य अंग– ग प ध ऽ ध ग प ग ऽ रे सा ऽ सा रे ग प ध ऽ ध सां धपप.	संवादी गंधार

सुरावट, ताल–एकताल

अस्ताई

धिं धिं धागे त्रक तू ना क त्ता धागे त्रक धीं ना
\+ ० २ ० ३ ४
ध प ध ग प प ग ऽ रे सा ऽ सा
ग प ध ध प ध ध प ग रे सा सा

अंतरा

धिं धिं धागे त्रक तू ना क त्ता धागे त्रक धीं ना
\+ ० २ ० ३ ४
प प प ध ध प ध सां ऽ सां सां सां
गं रें सां सां धसां प ध ग प ग रे सा

राग–देसकार ताल–त्रिताल (विलंबीत)

हूंतो तोरे कारन जागली । आईला भईला मोरी ॥धृ०॥ सुमिरन कर रही अखियन मोरी लाग रही चहूं ओर ॥१॥

अस्ताई

ता धीं धीं धा धा धीं धीं धा धा धीं धीं धा धा तीं तीं ता
३ + २ ०
ऽहुं तोऽ तोरे का ऽऽ ऽ रन जाऽ गली आ यी सा ऽ भइ लऽ
ऽसा धऽ धसां प धग प धग गरे सासा सा रे ग प गप धसां
मोऽ रीहुं तोऽ
रेंध सांसा धऽ

अंतरा

ता धीं धीं धा धा धीं धीं धा धा धीं धीं धा धा तीं तीं ता

३ + २ ०

सुमि रन क र रऽ ही अखि यन मो री लाग रही च हुं
गप धसां सां सां रेंध सां सांध सांरें ध प साध पध ध सां
ओऽ रहुं तोऽ
धग पसा धऽ

राग–देसकार ताल–त्रिताल (द्रुतलय)

ये मन पापी अपार प्रभु रे । इससे मुक्त करो, तुम प्रभु हम दासनके दास रे ।।धृ०।। गये जनमके यही जनमके । अगणित हुये पाप हमारे ।।१।।

अस्ताई

धा तीं तीं ता ता धीं धीं धा धा धीं धीं धा धा धीं धीं धा

० ३ + २

येऽ ऽ मऽऽ न पा ऽ पी अ पा ऽ ऽ र प्र भु रेऽऽ ऽ
सांध सां धपप प प ऽ ध प ध ऽ ऽ ध ध सां धपप ऽ
इ स से ऽ मु ऽ क्त क रो ऽ ऽ ऽ तु म प्र भु
ग प ध प ग ऽ रे सा सा ऽ ऽ ऽ प ग प प
ह म दा ऽ स न केऽऽ ऽ दा ऽ ऽ स रे ऽ ऽ ऽ
प प ध ऽ ध सां धपप ऽ ध ग प प ध ऽ ऽ ऽ

अंतरा

धा तीं तीं ता ता धीं धीं धा धा धीं धीं धा धा धीं धीं धा

० ३ + २

ग ये ऽ ज न म के ऽ ये ऽ ही ज न म के ऽ
प ध ऽ ध सां सां सां ऽ सां ऽ सां रें सां सां सां ऽ
अ ग णि त हु ऽ ये ऽ पा ऽ प ह मा ऽ रे ऽ
ध सां रें सां ध ऽ प ऽ प ऽ ध ग प ऽ ध ऽ

राग-देसकार ताल–त्रिताल (द्रुतलय)

जागो जागोजी । नूरी भोर । कहत कहत सुनत सुनत । दुबरकी रस बतीया ।।धृ०।। रहस रहस बैठे । नारहू फिर बैठे । भुजनसो भुज मिलावे । छतीयनसो छतीया ।।१।।

अस्ताई

धा तीं ती ता ता धीं धीं धा धा धीं धीं धा धा धीं धीं धा

० ३ + २

जा गो जा ऽ गो जी ऽ ऽ ऽ नुऽ ऽ ऽ री
सा ध ध ऽ सां ध प ऽ ऽ गप ध ऽ प
भो ऽ र ऽ क ह त क ह त सु न त सु न त
ग ऽ रे सा ध़ सा ध़ सा सा सा सा रे ग रे ग ग
दु ऽ ब र की ऽ ऽ ऽ र स ब ती ऽऽ ऽऽ ऽ ऽ
सा ऽ ध प ध ऽ ऽ ऽ ध प ध सां धसां धप प ऽ
ऽ ऽ ऽ
ध ग प

अंतरा

धा	तीं	तीं	ता	ता	धीं	धीं	धा	धा	धीं	धीं	धा	धा	धीं	धीं	धा
०				३				+				२			
र	ह	स	र	ह	स	बै	ऽ	ठे	ऽ	ऽ	ना	ऽ	र	हुं	ऽ
ग	प	ग़	प	प	प	सां	ध	सां	ऽ	ऽ	सां	ऽ	रें	सां	ऽ
फि	र	बै	ऽ	ठे	ऽ	भु	ज	न	सो	ऽ	भु	ज	मि	ला	ऽ
ध	सां	ध	प	प	ऽ	ग	प	ग	ग	रे	ग	प	ध	सां	ऽ
बे	ऽ	ऽ	ऽ	छ	ती	य	न	सो	ऽ	छ	ती	याऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ
सां	ऽ	ऽ	ऽ	प	प	ध	ध	ध	ऽ	ध	सां	धसां	धप	प	ऽ
ऽ	ऽ	ऽ													
ध	ग	प													

राग—पिलू

इस रागमें ऋषभ यह स्वर तीव्र लगता हैं। गंधार, मध्यम, धैवत और निषाद यह स्वर कोमल तीव्र दोनो तरहके लगते हैं। कोमल ऋषभ बहोत कमती लगता है। यह राग मन्द्र और मध्य सप्तकमें विशेषतः गाते हैं। मध्यम स्वरको षड्ज बनाकर इस राग को गाते है। यह राग करुण रस प्रधान है। यह राग दिनके तीसरे प्रहरमें और रातको किसीभी प्रहरमें गाया जाता है।

आरोह—सा ग् म् प नी सां	**जाती—औडव—संपूर्ण**
अवरोह—सां नि् ध प म् ग म् ध् प मग् रे सा	**वादी—गंधार**
मुख्य अंग—म प नी सा ग् ऽ सा ऽ ग म् प ग म् ध् प मग् रेसा ऽ ऽ	**संवादी—निषाद**

सुरावट, ताल—एकताल

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	त्ता	धागे	त्रक	धी	ना
+		०		२		०		३		४	
[illegible]	ग्	रे	सा	ऽ	रे्	नी	सा	नी	ध्	प	ऽ
[illegible]	ध्	प	ऽ	प	ध्	नी	ध्	सा	ऽ	ग्	रे
[illegible]	ऽ	ग्	म्	प	ऽ	ग्	ऽ	ग्	रे	नी	सा।।
[illegible]	सा	सा	ग	ग	ग	ग	म्	प	ऽ	प	म्
[illegible]	ऽ	ग	म्	ध्	प	ग्	ऽ	रे	सा	गम्	पनी
[illegible]	नी	ध्	प	ग्	ऽ	प	ग्	ऽ	रे	सा	ऽ।।

राग—पिलू ठुमरी ताल—दीपचंदी (विलंबीतलय)

पिया बिदेस गये। गयेरी माधो ।।धृ०।। लिख लिख पतिया। भेजू सैयाको कैसा मोहलियो ।।१।।

अस्ताई

धा	धीं	ऽ	धा	धा	तीं	ऽ	ता	तीं	ऽ	धा	धा	धीं	ऽ
+			२				०			३			
										पिया	ऽबि	देऽ	सग
										गग	मूप	गुऽ	सानी
पि	ऽ	ऽ	ग	ये	री	ऽ	मा	धो	ऽ				
सा	ऽ	ऽ	ग्	ग्	ग्	ऽ	ग	सा	नी				

अंतरा

धा धीं ऽ धा धा तीं ऽ ता तीं ऽ धा धा धीं

\+ २ ० ३

लिख

सासा

पति या ऽ मे जुऽऽ सै ऽ याऽ को ऽ क सा मो ह

पप प ऽ प म्पध प ऽ गप म् ग नि् नि् नि् ध

योऽऽऽ ऽ ऽ ग ये री ऽ मा धो ऽ

गपम्ग ऽ ऽ ग् ग् ग् ऽ ग् सा नी

राग–पीलू ताल–त्रिताल (मध्यलय)

आली पिया बिन मोरा कैसो जिया तरसत । बदरा छाये पव पुरवाये । दामिनी दमकत मेघवा बरसत ॥धृ०॥ सगरी सहेली फेर अलबे अपने मंदर बिच हमहि अकेली । हकिम पिया सों कहियो जाय उन विन रै बीत मोहे तडपत ॥१॥

अस्ताई

धा तीं तीं ता ता धीं धीं धा धा धीं धीं धा धा धीं धीं

० ३ \+ २

आ ली पि या बि न मोऽ रा कै सोऽ जि या त रऽ स

ग् ग् म् प ग् ग् रेसा सा सा नीध़ प ध़ सा नीध़ सा

द रा ऽ छाऽ ऽ ये ऽ प व न पु र वाऽ ऽ ये

सा सा ऽ सारे ग् ग् ऽ ग् ग् ग् म् प म्ग ग् सा

ऽ मि नि द म क त मे घ वा ऽ ब र स त

ऽ सा सा ग् ग् ग् ग् ग् ग् रे सा सा नी सा सा

अंतरा

तीं ती ता ता धीं धीं धा धा धीं धी धा धा धीं धीं धा

३ \+ २

ग री स हेऽ ऽ ली ऽ फे र अ ल बेऽ ऽ लीऽ ऽ

सा सा सा सारे ग् ग् ऽ ग् ग् म् प म्ग ग् रेसा सा

प ने मं द र बि च ह म हिं अ केऽ ऽऽ ली ऽ

ग् ग् ग् रे सा सा सा सा नी सा रे सारे सानी ध़ प

कि म पि याऽ ऽ सों ऽ क हि यो ऽ जाऽ ऽऽ य ऽ

सा सा सा सारे ग् ग् ऽ रे ग् म् प गम् गरे सा ऽ

न बि न रै ऽ न बी ऽ त मो हें त ड प त

ग् ग् रे रे ऽ सा सा ऽ नी सा रे सा नी ध़ प

राग–बिहाग

अस्तांईके आलाप

साऽऽऽ, नीसारेसा नीऽऽ, नीऽ धपऽ, प ऽ नीऽ, प सा नीऽ, प नी
पसाऽ नीरेसानीऽ प नी सा ग ऽ रेसाऽ.

नीऽ सा गऽऽ, गऽऽ नीऽ स नीसा गऽ, पनीस ऽनीसागऽ, पनीनी सा
गऽ, गऽ रेसा.

नीसारेसानीसागऽ, गऽ, गरेसानी, सानीधप, पनीपनीसा, नीसानीसाग
सानीपनीसा, रेसानीसागऽ, पनीपनी नीसानीसा सागसागऽ, सा ग मऽ ग ऽरेसा

सा ग ग मऽऽ, मऽ नीऽ सागऽ, नीऽ सामऽ, मऽग, साऽनी, साम
नीसानी गऽ, नीसानी मऽ, मऽग ऽरेसा

नीसागमऽगमऽ, मऽ गरेसानीसागऽ, गरेसानीगमऽ, मगरेस
सानीधप, पनीसारेसा नीसागमग सागमऽ, म ग पऽ ग म ग ऽरेसा.

नी सा म ऽ म ग पऽऽ, पऽ पऽ, नीसागऽ सागमऽ गमपऽ, पऽ
मपमप ऽम गम गम गऽ, साग साम साप ऽम ग म ग ऽरेसा.

मगरेसानीसामगपऽ, प ऽम गमगरेसानी, सानीधपऽ, पनीसाग, नीसागम
सागमपऽ, मपमप ऽम गमगमपमगऽ, म ग प म ध गऽ म ग ऽरेसा.

ग म पऽ, प धऽ गऽ मगऽ, गम गप मध पऽ, धमऽ, धपऽ, पधप
म गमगऽ, मपधपम गमपमगऽ, गऽ नीऽ धप गम ग ऽरेसा.

ग म पऽनीऽऽ, नीऽऽ म ग, सा नीऽ, मग पम धप नीऽ, गमपपनीऽ,
ऽ धप ऽ गम ग ऽ रेसा.

नीसागमपमगमपनीऽ, नीऽ धपमगऽ मगरेसानीऽ, नीसागमसागम,
मपधमपनीऽ, गमपमगमप, मपधपमगनीऽ, ग गम म मप प पनीऽ, सा
पऽ, म मपनीऽ, प नी सां.

अंतराके आलाप

ग म प नीऽ नीऽ सांऽऽ, सांऽऽ प नीऽ, प सांऽ, ग म प नीऽ, ग म
सांऽ, सांऽ साऽ मग पम धप सांनी सां.

पमगमपनीसांऽ सांऽ नीधपमगमपनीऽ, धपमगमपसांऽ, सागमपम
मपधप मपनीसांनी पनीसांऽ, नीसांनी पधप मपम गमग, साम गप मध पसां
रें ऽ सां.

गमपनीसांऽ, नीऽ सांरेंऽ सांऽ, पनीपसांनीरेंसां, सांरें नी, नीरें सां,
नीऽ रेंसांऽ रेंनीऽ, नीसांरेंसांनीऽ, मपधपमऽ, नीसारेसानीऽ, रेसानी, धपम,
सांनीऽ, प नी सां गं ऽ रेंसां.

नी सां गंऽऽ, गंऽऽ रेंसांनीऽ, धपमऽ, पमगऽ, गंऽ, प नी प सां नी रें सां
ऽ, मं गंऽ रेंसां.

अस्ताईकी ताने

पनी साग मग रेसा, साम् गम् गरे सा, मग मग रेसा नीसा,

पम् गरे सा, धप मग मग रेसा, गम् गम् गरे सा, नीध पम् गरे सा.

नीसा गम् पम गम् गरे सा, पध पम गम् पम् गरे सा,

पम धप मग मग रेसा, सांनी धप मप गम् गरे सा, गम् पनी सां

धप मग रेसा.

नीसा गम् पध पम गम् पम् गरे सा, गम् पनी सांनी धप सां

धप मग रेसा, पनी सांनी धप मप धप मग मग रेसा, मग रेसा

मग नीध पम् गरे सा, पनी सांरें सांनी धप गम् पम् गरे सा, सा

नीसां धनी पध मप गम् गरे सा.

नीसा गम् पम् गम् पनी धप मप नीसां पनी सांरें सांनी

सांनी धप मग रेसा, नीसा गम् साग मप गम् पनी मप नीसां

सांरें नीसां गंरें सांनी धप मग रेसा, साग मप मग रेसा गम्

सांनी धप मप नीसां गंरें सांनी धप मग रेसा, प मग रेसा नी धप

रें सांनी धप गं रेंसां नीध पम गम् पम् गरे सा

गम् गग मग गम् गम् गरे सा, पध पप धप पध पध पम

नीसां नीनी सांनी नीसां नीसां नीध प, सांरें सांसां रेंसां सांरें सांरें सांनी

धप, गम् गरे सा. ग म् प मग रेसा, प नी सां नीध पम, नी सां

रेंसां नीसां पनी सा नीध पम गम् गरे सा.

अंतरे की ताने

पम गम् पनी सां, गम् पनी पनी सां, पनी पसां नीरें सां, गम्

सांरें सां, सांरें सांनी पनी सां, गम् पनी सांगं रेंसां.

पध पम गम् पनी सांरें सां, रेंसां नीध पम गम् पनी सां, गम्

मध पसां नीरें सां, सांरें सांनी धप गम् पनी सां.

सांनी धप मग रेसा नीसा गम् पनी सां, पनी सांगं रेंसां

पम गम् पनी सां, साग मप गम् पनी मप नीसां पनी सां,

सांनी पध मप गम् पनी सांरें सां, मग रेसा नीध पम गंरें

पनी सां

नीसा गम् पध पम गम् पनी सांनी धप मप नीसां गंरें

धप गम् पनी सां, गम् गप मग रेसा पनी पसां नीध पम

नीगं रेंसां नीध पम गम् पनी सां, मग मग रेसा धप धप

नीध नीध पम सांनी सांनी धप गंरें गंरें सांनी रेंसां नीध

धप नीध पम धप मग मग रेसा सा गम् पनी सां, गम्

रेसा मध धप मग पनी नीध पम नीसां सांनी धप सांगं गंरें

सांरें रेंसां नीध पप नीनी धप मग गप पम् गरे सा.

राग—बिहाग ख्याल ताल—एकताल (विलंबित)

कवना ढंग तोरा सजनी तूं तो इतरात उतरत बितीजात ॥धृ०॥ छांड महल अत तोरी बलादेऊं। सोतन घर रही जात ॥१॥

अस्ताई

धिं	ना	धि	धि	धागे	तिर[...]
४		+		०	
ऽऽ कत्र	नाऽ ढंग	तो	राऽ ऽऽ	सजऽ नीऽ	ऽ ऽ
ऽऽ नीध	पऽ गम्	ग	गऽ रेसा	साम्ग पऽ	गम्[...]
तू	ना	क	ता	धागे	तिर[...]
२		०		३	
तुंऽ तोऽ	इत राऽ	ऽऽ ऽऽ ऽत	उऽ तऽ	राऽ तऽ	बिती ज[...]
साऽ नीऽ	साप पऽ	मप मप धग	मऽ मऽ	साऽ नीऽ	साम्[...]
धि	ना				
४					
तऽ ऽऽ कत्र	नाऽ ढंग				
गम् पनी नीध					

अंतरा

धिं	ना	धिं	धि	धागे	तिरकिड
४		+		०	
ऽ इऽ	ऽम हल	अत ऽऽ	ऽ	तो गेब	लाऽ ऽऽ ऽ
ऽ सोऽ	ऽसां सांनी	रेंसां ऽऽ	ऽ	नीऽ रेंसां	नीऽ धप ऽ
तू	ना	क	ता	धागे	तिरकिड
२		०		३	
ऽ ऽऽ	ऊं	सोऽ तन	घर रही	जा ऽऽ ऽ ऽऽ	तऽ ऽऽ
नी धसां	नी	गम् पनी	पनी सांगं	गं रेंसां नीधप	गम् गऽ
धि	ना				
४					
ऽ ऽऽ कत्र	नाऽ ढंग				
म् पनी नीध					

राग—मालकंस

यह रागका अस्ताई–अंतरेका विस्तार यहाँ दिया नहीं, क्यों कि रागसदृश पीछले वर्षमें भीमपलास, बागेश्री, भूप इ. रागोंका विस्तार गया है। एक पलटेके आधारपर अनेक पलटे कैसे बनाये जाते है इ नमुना नीचे दिया है।

१) गुम् गुसा, मध् मग्, धनि् धम्, नि्सा निध्, सांगं सांनि्, नि्ध्, धनि् धम्, मध् मग्, गम् गुसा.

२) गुम् गुम् गुसा, ३) गुम् गुसा नि्सा, ४) ग् म् गुसा नि्सा, ५) मग् मग् सा, ६) नि्सा गुम् गुम् गुसा, ७) साम् गुम् गुसा, ८) साम् गुम् गुसा, ९) गुम् गुसा गुम् गुसा, १०) मग् साग् मग् ११) साग् मग् साग् मग् सा, १२) मम् गुम् गुसा, १३) गुग् गुग् सा, १) गुम् मग् मम् गुसा, १५ धनि् साग् मग् सा.

नि्ध् सानि् गुसा मग धम् निध् सांनि गंसां सांगं नि्सां धनि् मध् साग् नि्सा. सानि्ध् गुस नि् मगुसा धमग् नि्धम् सांनि्ध् गंसांनि् धनि् मधनि् गुमध् सागुम् नि्साग् धनि्सा. धनि् धसा नि्सा, नि्सा साग्, साग् साम् गुम्, गुम् गुध मध्, मध् मनि् धनि्, धनि् नि्सां, सांनि् सांध् नि्ध्, नि्ध् नि्म धम्, धम् धग् मग्, मग् गुसा, सागुग् साममम् गुम् गुमम् धध् मध् मधध् मनि्नि् धनि्, धनि् धसांसा नि्सां सांनि् नि्ध् धम् मग् गुसा,

---

राग–मालकंस ख्याल ताल–एकताल (विलंबित)

येरी ये मोरा लाल। मोहे तो कोन देस गइला। भले भोर ता दिन ते छु ना सुहाय। ॥धृ०॥ मोहे तो लागी रहत है निठुर प्रीत। तुम तो जात दिसवा॥१॥

अस्ताई

				धिं	ना
				४	
				ऽऽ येरी	येऽ मोरा
				ऽऽ गुसा	धनि् साम्
धिं	धिं	धागे	तिरकिट	तू	ना
+		०		२	
ाऽ लऽ	मोऽ हेऽ	तोऽ कोऽ	नदे ऽस	भइ लाऽ	भऽ लेऽ
ऽ साऽ	नि्ऽ साऽ	साऽ नि्ऽ	नि्सा ऽसा	गुसा धऽ	धऽ नि्ऽ
क	ता	धागे	तिरकिट	धिं	
०		३		४	
ोऽ ऽर	ताऽ दिन	तेऽ कछु	नाऽ सुहा	ऽय येरी	
ाऽ साऽ	म्ऽ मम्	गम् धनि्	धम् मग्	गुसा गुसा	

अंतरा

ना

मोऽ हेतो

गम् धनि्

धिं	धिं	धागे	तिरकिट		
+		०			
ला	गी	रह तहै	ऽनि ठुर	प्रीऽ	
सां	सां	निसा निसां	ऽनि सांगं	धऽ ऽध	धानि सा
क	ता	धागे	तिरकिड	धिं	
०		३		४	
जाऽ तऽ	पऽ रऽ	देऽ ऽम	ज्ञाऽ ऽऽ	ऽऽ येरी	
गंऽ सांऽ	निऽ सांऽ	धऽ ऽमं	गम गमा	निसा गमा	

राग- दूर्गा

मालकंस रागमे जो पलटे (स्वररचना) दिये गये है वैसेही एक पलटे आधारपर अनेक पलटे यह रागमे बनते है। नमुना नीचे दिया है।

१) रेम्, रेसा, मप मरे, पध पम्, धसां धप, सांरें सांध, रेंमं रेंसां, सांरें सां धसां धप, पध पम्, मप मरे, रेम्, रेसा,

२) रेम् रेम् रेसा ३) रेम् रेसा धसा, ४) रे म रेसा धसा ५) सारे मरे सा,

इस तऱ्हासे विद्यार्थियोने स्वररचना करनेका प्रयत्न करना आवश्य है। किसीभी स्वररचना द्रुतलयमे तान निर्दोष आनेके लिए एकपट, दोप और चोपटमें आना चाहिए। रियाझ करते समय स्वर और लयपर ध्या रखना जरूर है।

राग-मालकंस   ताल-त्रिताल (विलंबितलय)

येरी ये मोरा लाल ... या नहीं, क्यों कि ना सुहाय।।धृ०।। ... रे। जगतके निस्तार।। धृ०।। भवजल उतरू। गुन नही ... का विस्तार ... सेवा।।१।। लगावो पार।।१।।

अस्ताई

ता	धीं	धीं	धा	धा	धीं	धीं	धा	धा	धीं	धीं	धा	धा	तीं	तीं	ता
३				+				२				०			
...	ऽर	सका	ऽन्ह	रे	ऽ	ज	ग	तऽ	के	ऽ	निऽ	स्ताऽऽऽ	र	ऽ	ऽ
...	ऽध	धम्	ऽरे	प	ऽ	म्	रे	साध	सा	ऽ	सांध	धसांरेंऽ	ध	म्	रे

अंतरा

ता	धीं	धीं	धा	धा	धीं	धीं	धा	धा	धीं	धीं	धा	धा	तीं	तीं	ता
३				+				२				०			
भव	जल	उत	रू	ऽ	उन	नही	मोऽऽऽ	हे	तुम	हील	गाऽऽऽ	वो	पा	र	
मम्	पध	सांध	सां	ऽ	सांध	सांरें	धसांधप	म्	मरे	पप	मप	ध	म्	रे	सा

स्व. गा. पं. भास्करबुवा बखले से संस्थापित

पुणे भारत गायन समाज

यह संस्था सरकारमान्य है। संगीत शिक्षा, संशोधन, प्रकाशनादी कार्य कर रही है। समाज के

भास्कर संगीत विद्यालय में

गायन, हार्मोनियम्, तबला, सीतार, व्हायोलीन वादनकी शिक्षा मिलती है। "समाज" द्वारा दिये जानेवाली "विशारद" और "पारंगत" पदवियाँ महाराष्ट्र सरकारके रेझोल्युशन क्र. SSN-3460-G दि. २०-१२-१९६१ से मंजूर है।

कोई भी संगीत प्रेमी और अभ्यासक यह परीक्षा दे सकते है।

पत्रव्यवहार का पता

कार्यवाह,
पुणे भारत गायन समाज
बाजीराव रोड, शनिपार नजिक, पूना ४११ ००२.